International Journal of Information Movement Vol.2 Issue II (June 2017)
Website: www.ijim.in ISSN: 2456-0553 (online) Pages 144-147

क्रन्तिकारी नारी के रूप में मीराबाई

प्रमिला देवी
प्राध्यापिका
कन्या महाविद्यालय,
खरखौदा (सोनीपत)
E-mail: permila10478@gmail.com

हिन्दी साहित्य में मीरा उन भक्त महिला मूर्धन्य रचनाकारों में से एक है जिनकी रचनाओं ने लोकमानस को मात्र प्रभावित ही नहीं किया बल्कि उद्वेलित भी किया है । कृष्ण भक्त मीरा के पदों ने संपूर्ण भारतीय समाज को लौकिक एवं अलौकिक प्रेम, समर्पण और विद्रोह हेतु काफी प्रभावित किया है । संपूर्ण साहित्य में त्याग और विसर्जन, उपासना और आराधना, पूजा और अर्चना, विद्रोह और क्रांति की कोई असाधारण प्रतिमा है तो वह है मीराबाई। मीरा की रचनाओं में लोक सांस्कृतिक चेतना चरमोत्कर्ष को प्राप्त करती है। इनमें लोक व्यवहार, लोकानंद, लोकहृदय की धड़कन, लोकदर्शन, लोक संस्कृति, लोकउक्ति, लोकलय और लोकरस के साथ–साथ लोक और समाज मे व्याप्त रूढ़ियों, कुप्रथाओं और खोखली मान्यताओं के प्रति विद्रोह की भावना विद्यमान है ।

मीरा का आविर्भाव ऐसे वातावरण में हुआ था, जब हमारे देश में भक्ति का राष्ट्रव्यापी आंदोलन चल रहा था । गुजरात में नरसिंह मेहता, कर्नाटक में हरिदास, पंजाब में गुरूनानक, दक्षिण में अण्डाल, अक्कमहादेवी, हरियाणा में रैदास इत्यादि भक्त संत कवियों की भक्ति का जनमानस पर विशेष प्रभाव पड़ रहा था । तब भारतीय जनमानस पर मीरा के भक्तिकाव्य का इतना प्रभाव पड़ा कि ब्रज, राजस्थानी, गुजराती में मीरा के पदों का भाषान्तर ही नहीं हुए बल्कि मीरा के नाम से अनेक पद रचे गए । आज भी मीरा के पद, भजन ग्रामीण और नगरीय परिवेश में गाये जाते हैं । राजपूतानी मीरा के आराध्यदेव कृष्ण हैं ।

''मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरो न कोई ..... ।''[1]

मीरा ने समाज को आत्म गौरव और स्वाभिमान के साथ जीने का संदेश दिया है । क्रान्तिकारी स्वर दृष्टव्य है । रूढियुक्त संकुचित बंधनों का सामना करके कृष्णमय रहना, साधु सत्संग, भजन–कीर्तन द्वारा भक्तिमय रहना ही मीरा का प्रमुख लक्ष्य था । यह सब साहस और नीडरता से आत्मगौरव हेतु कुलीन मर्यादा, लोकलाज, राजमहलों के बंधनों की कोई चिंता एवं डर नहीं था, उन्होंनें स्वयं कहा है कि:

''तात मात भ्रात बन्धु अपनों नहिं कोई

छांडि दई कुल की कानिका कैरगो कोई ।

सन्तन ढिंग बैठि बैठि लोक लाज खोई ।

चुनरी के लिए टूक टूक ओढ़ लीनी लोई ।''[2]

उन्होंनें राजपरिवार की प्रत्येक चुनौतियों का अभूतपूर्व सामना किया था । मीराबाई की हत्या हेतु सांप का पिटारा भेजा गया, जहर का प्याला भेजा गया किन्तु मीरा की अटूट एकनिष्ट अलौकिक भक्ति के कारण जहर का अमृत बन गया, सांप देवता सालिग्राम हो गए । जनश्रुतियों के आधार पर ऐसे ही कुछ प्रसंग प्रचलित हैं; जिससे हमें ज्ञात होता है कि मीरा को मारने हेतु अनेक प्रयत्न किए गए थे । जब–जब उनके भक्ति मार्ग पर अंकुश लगाया गया तो उन्होंनें कहा–

''काहू की मैं बरजी नाही रहूं

जो कोई मोकूं एक कहै, मैं एक की लाख कहूं ।''[3]

राजपरिवार एवं रूढियुक्त समाज के अवरोधों का उठकर हिम्मत से सामना करके मीरा अकेली ही टक्कर लेती थी । उन्होंनें बताया है कि मनुष्य में झूठ को झूठ और सच को सच कहने का साहस अवश्य होना चाहिए । भारतीय समाज को मीरा से प्रेरणा मिली है कि यदि मनुष्य में दृढता है तथा संघर्ष एवं कष्ट सहन करने की शक्ति और क्षमता है तो कठिन स कठिन ध्येय प्राप्ति में सफलता अवश्य मिलती है । पर्दा प्रथा का विरोध, सती प्रथा का विरोध, कुरिवाज एवं कुपरम्पराओं का विरोध मीरा ने किया था । विधवा महिलाओं पर हो रहे अत्याचारों का विरोध करके साहस, हिम्मत, धैर्य और निडरता द्वारा नयी चेतना का संचार किया । मीरा ने ऊँच नीच के भेदभाव को मिटाकर सामाजिक विषमता का विरोध किया था ।

''ऊँच नीच जो न नहीं, रस की रती लगी।''

विद्रोही कवयित्री मीरा की राह में बहुत ज्यादा अड़चने थी । अकेली मीरा के सामने पूरा परिवार और पुरूष प्रधान सामंती समाज विरोध में खड़े थे । आक्रोश का स्वर मीरा में ज्यादा मुखरित है । संयुक्त परिवार के सारे झमेलों का सामना करना मीरा के लिए अनिवार्य था । अपने प्रियतम तक पहुँचने में आण्डाल को पिता विष्णुचित्त की सहायता मिली । लेकिन मीरा को परिवार की ओर से विषपान करना पड़ा । अट्ठाइस साल की जवानी में मीरा विधवा बनी । सास के लिए वह कुलनाशिनी बन गयी । प्रेम दीवानी मीरा पुरूषों से डरती सहमती नहीं । वे गिरिधर के सामने गाती नाचती हैं ।

''श्री गिरिधर आगे नाचूँगी,

नाच नाच पिव रसिक रिझाऊँ, प्रेमी जनकूँ जाचूँगी,

प्रेम प्रीति का बाँधि घुँघरू, सुरत की कछनी काछूँगी,

लोक लाज कुल की मरजादा, या में एक न राखूँगी ।''4

मीरा ने सामाजिक प्रतिष्ठा का ख्याल नही रखा । समाज में प्रदत्त स्त्रीत्व के सीमित दायरे को उन्होंनें तोड़ा । जब मीरा के सामने विष का प्याला आया तो निडर होकर आत्मविश्वास के साथ पी लिया। यह मामूली बात नहीं । इस संदर्भ में आचार्य विश्वनाथ त्रिपाठी का वक्तव्य सटीक लगता है – *''विषपान मीरा का ... मध्यकालीन नारी का ....स्वाधीनता के लिए संघर्ष है और अमृत उस संघर्ष से प्राप्त तोष है जो भाव सत्य है। मीरा का संघर्ष जागतिक, वास्तविक है, अमृत उनके हृदय या भाव जगत में ही रहता है।''*[5] मीरा के पदों में अपने समय के रूढिग्रस्त समाज से टकराने का स्वर काफी मात्रा में सुनाई पड़ता है । *''मीरा जब बार–बार लोक लाज, कुल की मर्यादा को तोड़ने की बात करती है तब वह उसी बाधा का संकेत करती है ।''*[6] मीरा ने ईश्वरीय आलम्बन को मानवीय संबंधों से जोड़ा । ''मीरा ने पति की परम्परागत सत्ता एवं अधिकार को स्वीकार नहीं किया और न पति के देहान्त के बाद सती होकर परम्परा को आगे बढ़ाया। उस युग के सामन्ती परिवेश तथा पुरुष प्रधान समाज में पति को परमेश्वर मानने वाली हिन्दू स्त्री का 'परमेश्वर को पति' मानने का अधिकार प्राप्त करना आसान नहीं था । यह एक प्रकार से राजनीतिक सामन्तवाद तथा धार्मिक परम्पराओं के विरूद्ध मीरा के रूप में युग की नारी का मूल विद्रोह था ।''[7]

सामन्ती व्यवस्था के विरोध में भक्ति आन्दोलन खड़ा रहा । सामंती व्यवस्था में नारी की हैसियत सिर्फ शरीर तक सीमित थी । इधर मीरा महल की चार दीवारों के अन्दर दुःखी जीवन बिताना नहीं चाहती थी। सास, ननद, देवर सबके सख्त विरोधों के बावजूद बाहर साधु संगति में रहने की हिम्मत मीरा ने दिखायी । रूढ़ि की बेड़ी तोड़कर मीरा बाहर आयी, सामान्य जन जीवन से जुड़कर अपने गिरधारी के संग नाचने लगी, गाने लगी । द्रौपदी, अहिल्या, कुब्जा, शबरी और गोकुल की अहीरनों की पीड़ा को, उनकी कसक को मीरा ने अनुभव किया था । मीरा समूची स्त्री जाति की प्रतिनिधि बनकर खड़ी है । महादेवी जी ने अपन व्याख्यान में मीरा के संदर्भ में कहा है – ''मीरा के पदों की उड़ान समूचे भारतीय आकाश में व्याप्त है, मानो कोई मुक्त पंछी असीम आसमान में उड़ रहा है ..... वे राजस्थान की हैं, गुजरात की हैं, बंगाल की हैं, समूचे भारत की हैं । वे भक्ति आन्दोलन की प्रेरक शक्ति हैं । जिसने ब्राह्मण और शूद्र का भेदभाव ही मिटा डाला है। अतः वे सभी जातियों की हैं, सभी धर्मो की हैं, सर्वकालीन सर्वदेशीय है।''[8]

मध्ययुगीन समाज के राजघराने की रानी मीरा ने सती होने से इंकार किया और घराने से बाहर आयी । यह मामूली क्रांतिकारी काम नहीं था । स्त्री विमर्श की दृष्टि से मीरा का जीवन और कृतित्व

आज भी प्रासंगिक है। राजसी दमन और स्त्री की गुलामी के खिलाफ उनका प्रतिरोध ऐतिहासिक महत्त्व रखता है । मीरा के पदों में उनके जीवन–संघर्ष की प्रमाणिक अनुगूंज है । प्रेम भक्ति और नारी चेतना की दृष्टि से मीराबाई के पद बेमिसाल हैं । मीरा मानव समाज के लिए क्रांतिदर्शी अवतार है । वह सत्यम् शिवम् सुन्दरम् रूप है । वह सर्वोत्तम जीवन जीने के लिए हमें नई दिशा प्रदान करती है ।

सारांश रूप में यही कहा जा सकता है कि मध्यकाल से लेकर आज तक भारतीय जनमानस पर मीरा का अमिट प्रभाव रहा है । मीरा न तो राजस्थान की थी, न तो गुजरात की थी किंतु सारे भारतवर्ष की थी । आज विश्व के प्रबुद्ध विद्वतजन भी मीरा के जीवन एवं पदों से प्रभावित हुए दिखाई पड़ते हैं । भारतीय जन मानस पर मीरा का प्रभाव जीवन विकास हेतु प्रेरणास्रोत समान है । मीरा का जीवन ही नारी अस्मिता और मूल्यों की लड़ाई है ।

संदर्भ –

1. मीरा जीवन और काव्य – निर्मला झवेरी
2. मीरा जीवन और काव्य – डॉ. सी.एल. प्रभात
3. मीरा एक स्मृति ग्रंथ – परशुराम चतुर्वेदी
4. नन्द चतुर्वेदी – सं. मीरा संचयन – वाणी प्रकाशन, पृ0 148
5. विश्वनाथ त्रिपाठी – मीरा काव्य – वाणी प्रकाशन, पृ0 51
6. परशुराम चतुर्वेदी – मीरा की पदावली, पृ0 52
7. डॉ. कमल किशोर गोयनका – हिन्दुस्तानी जबान, अक्तूबर–दिसम्बर 2005, पृ0 6
8. महादेवी वर्मा – मीरा श्रद्धांजलि, मीरा प्रतिष्ठान महिला मंडल, उदयपुर, 1975